United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

"भारतीय ज्ञानपरंपरा में बौद्ध एवं जैन दर्शनों का यथार्थवाद"

प्रो. जी. वी. रत्नाकर – मनु

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञानपरंपरा दुनिया की सबसे प्राचीन और लगातार विकसित होती हुई बौद्धिक परंपराओं में से एक मानी जाती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें ज्ञान को केवल ग्रंथों, दर्शन या आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे सीधे जीवन के व्यवहार, समाज की संरचना और मनुष्य के नैतिक आचरण से जोड़ा गया है। इस परंपरा में यह माना गया है कि सच्चा ज्ञान वही है जो मनुष्य को अपने जीवन को बेहतर ढंग से समझने, दुखों से मुक्ति पाने और समाज में ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में जीने की दिशा दिखाए।

बीज शब्द- भारतीय ज्ञानपरंपरा, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, यथार्थवाद, श्रमण परंपरा, नैतिकता,

मूल आलेख

भारतीय ज्ञानपरंपरा के अंतर्गत बौद्ध और जैन दर्शन श्रमण परंपरा के प्रमुख रूप में सामने आते हैं। इन दोनों दर्शनों ने यथार्थ को समझने के लिए दैवी शक्तियों, चमत्कारों या काल्पनिक धारणाओं पर निर्भर होने के बजाय मनुष्य के प्रत्यक्ष अनुभव को आधार बनाया। उन्होंने जीवन में मौजूद दुख, परिवर्तनशीलता, कर्म के प्रभाव और सामाजिक नैतिकता को केंद्र में रखकर चिंतन किया। बौद्ध दर्शन ने यह बताया कि जीवन दुःखमय है और इस दुख के कारणों को समझकर तथा सही आचरण अपनाकर मुक्ति का मार्ग खोजा जा सकता है तथा मुक्ति (निर्वाण) ही व्यक्ति के लिए परम सुख की अवस्था है। कहा भी गया है-

'निब्बानं परमानि सुखानि'* [1]*-उदान

वहीं जैन दर्शन ने अहिंसा, संयम और आत्मानुशासन इत्यादि को जीवन का मूल आधार मानते हुए कर्म और उसके परिणामों की व्यावहारिक व्याख्या की गई है। यथा -

'हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिव्रतम्।' [2] - तत्वार्थ सूत्र 7.1

इस प्रकार, बौद्ध और जैन दर्शन भारतीय ज्ञानपरंपरा के उस यथार्थवादी दृष्टिकोण को सामने रखते हैं, जिसमें जीवन को जैसा है वैसा समझने, अनुभव के आधार पर सत्य को परखने

तथा नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज को बेहतर बनाने पर बल दिया है। कहा भी गया है – ***'स्वपरान्तरं जानाति यः स जानाति।'***[3] -इष्टोपदेश -33

बौद्ध एवं जैन दर्शन के प्रमुख तत्त्वों तथा उनके यथार्थवादी विचारों का समग्र दर्शन आज के सामाजिक और मानवीय संदर्भों की प्रासंगिकता पर विचार करता है। भारतीय चिंतन परंपरा का विकास केवल धार्मिक या आध्यात्मिक खोजों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह जीवन के प्रत्यक्ष यथार्थ से गहराई से जुड़ा रहा है। भारतीय दर्शन की विविध धाराएँ- वैदिक, उपनिषद, बौद्ध, जैन, सांख्य, योग आदि मानव जीवन के प्रश्नों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखती हैं –

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम् ।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥[4] महाभारत/वनपर्व-117

विशेष रूप से बौद्ध एवं जैन दर्शन ऐसे समय में विकसित हुए जब वैदिक कर्मकांड, यज्ञीय परंपराएँ और वर्ण-व्यवस्था समाज पर हावी थीं। इन दर्शनों ने यथार्थ जीवन की पीड़ाओं, असमानताओं और नैतिक संकटों को केंद्र में रखकर अपने दर्शन की रचना की।

भारतीय ज्ञानपरंपरा में 'ज्ञान' का अर्थ केवल बौद्धिक जानकारी नहीं, बल्कि जीवन बोध है। वेदों में ऋत और धर्म की अवधारणा, यथा- "***ऋतेन ऋतमपिहितम्***"[5]-ऋग्वेद ५.६2.1

उपनिषदों में आत्मा ब्रह्म का चिंतन, जैसे – ***"नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्" ॥***[6] कठोपनिषद् 1.2.23 और मुण्डकोपनिषद् 3.2.3

और आगे चलकर श्रमण परंपरा में नैतिकता व व्यवहारिक अनुशासन ये सभी भारतीय ज्ञानपरंपरा के विभिन्न चरण हैं। जैसे – ***"अत्ता हि अत्तनो नाथः" तथा "अप्प दीवो भव"***[7]- बुद्धवाक्य

भारतीय ज्ञानपरंपरा की सबसे प्रमुख विशेषता ज्ञान और आचरण का अभिन्न संबंध है। यहाँ ज्ञान को केवल बौद्धिक या सैद्धांतिक उपलब्धि नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवन में उतारना अनिवार्य समझा गया। वेद, उपनिषद, बौद्ध और जैन दर्शन सभी इस बात पर बल देते हैं कि जो ज्ञान व्यवहार में न उतरे, वह अधूरा है। इसलिए भारतीय चिंतन में 'जानना' और 'जीना' अलग-अलग प्रक्रियाएँ नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक हैं। क्योंकि ज्ञान का केंद्र बिंदु ही आत्मा है- "***ज्ञानाधिकरणमात्मा***"[8]- **न्यायदर्शन**

भारतीय ज्ञानपरंपरा की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता तर्क, अनुभव और साधना का समन्वय है। यहाँ अंधविश्वास या केवल परंपरा-आधारित स्वीकार्यता को महत्व नहीं दिया गया। तर्क द्वारा विचारों की परीक्षा, प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सत्यापन और साधना द्वारा आत्मिक अनुशासन इन तीनों को समान रूप से आवश्यक माना गया। बौद्ध दर्शन का प्रत्यक्ष अनुभव पर बल, जैन दर्शन का तार्किक अनेकांतवाद और उपनिषदों की आत्मानुभूति इस समन्वय के सशक्त उदाहरण हैं।

भारतीय ज्ञानपरंपरा व्यक्ति को समाज से काटकर नहीं देखती, बल्कि उसे सामाजिक दायित्वों से जुड़ा हुआ मानती है। धर्म, कर्म, अहिंसा, सत्य और करुणा जैसे मूल्य व्यक्ति के निजी आचरण के साथ-साथ सामाजिक जीवन को भी नैतिक दिशा प्रदान करते हैं। इस परंपरा में ज्ञान का उद्देश्य केवल आत्मकल्याण नहीं, बल्कि लोककल्याण भी है। कहा भी है-

"परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्"।[9] हितोपदेश

समस्त जीव-जगत के प्रति संवेदनशीलता, प्रकृति के साथ सामंजस्य और मानव-मानव के बीच करुणा का भाव इस परंपरा की आत्मा है। बौद्ध करुणा और जैन अहिंसा इसी सह-अस्तित्ववादी दृष्टि की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो भारतीय ज्ञानपरंपरा को मानवीय, नैतिक और यथार्थवादी स्वरूप प्रदान करती हैं। इसी पृष्ठभूमि में बौद्ध एवं जैन दर्शन का उदय हुआ, जिन्होंने ज्ञान को जीवन-यथार्थ से जोड़कर देखा। यथा-

"सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव॥"[10]

श्रमण परंपरा वैदिक परंपरा के साथ-साथ विकसित हुई एक ऐसी विचारधारा है, जिसमें दिखावे या कर्मकांड से अधिक महत्व सादगी, तपस्या, सही आचरण और अपने अनुभव से सीखने को दिया गया है। इसी परंपरा से बौद्ध और जैन दर्शन सामने आए। इन दर्शनों ने वेदों को अंतिम सत्य मानने से इंकार किया, ईश्वर को सर्वशक्तिमान मानने की धारणा पर सवाल उठाए और यह कहा कि अच्छे कर्म, नैतिक जीवन और मानव मूल्यों से ही जीवन बेहतर बन सकता है। इसलिए ये दर्शन जीवन की वास्तविक समस्याओं और मनुष्य के अनुभवों को आधार बनाते हैं, जिससे इनका दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से यथार्थवादी दिखाई देता है।

बौद्ध दर्शन, विशेष रूप से **गौतम बुद्ध** का विचार, सीधे मनुष्य के दुःख से शुरू होता है। बुद्ध ने कहा कि जीवन में दुःख है, इस दुःख का कारण हमारी तृष्णा और इच्छाएँ हैं, दुःख से मुक्ति संभव है और इसके लिए एक सही मार्ग अपनाया जा सकता है, जिसे अष्टांगिक मार्ग कहा गया है। ये सभी बातें किसी ईश्वरीय आदेश पर नहीं, बल्कि मनुष्य के अपने अनुभव और जीवन

की सच्चाई पर आधारित हैं। इसी वजह से बौद्ध दर्शन व्यावहारिक, सरल और मानव-केंद्रित माना जाता है।

डॉ. **भीमराव अंबेडकर** की चिंतनधारा बौद्ध दर्शन से गहराई से जुड़ी हुई है और यही जुड़ाव उनके सामाजिक-न्याय संबंधी विचारों को एक ठोस यथार्थवादी आधार प्रदान करता है। अंबेडकर ने बौद्ध दर्शन को केवल आध्यात्मिक मुक्ति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक समानता, मानव गरिमा और न्याय की स्थापना का प्रभावशाली माध्यम माना। बौद्ध धर्म को स्वीकार करते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यह दर्शन व्यक्ति को तर्कशील सोच विकसित करने की प्रेरणा देता है, जाति-भेद और सामाजिक अन्याय का नैतिक एवं वैचारिक विरोध करता है तथा मनुष्य को आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने का साहस प्रदान करता है। बौद्ध धर्म अंबेडकर के लिए केवल धार्मिक विकल्प नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और नैतिक क्रांति का मार्ग है, किन्तु ब्राह्मणवाद ने सनातन के विरोध को, मानवीय मार्ग को सुविधाजनक बनाने के लिए विकल्प के तौर पर बुद्ध को अवतार बना दिया। हिन्दू धर्म के शोषण और पाखंड विरोधी स्वर को शिथिल बना दिया और जनमानस में इस विकल्प की स्वीकृति आम हो गई। वहीं चार्वाक दर्शन को विदेशी बताकर उसे दफन कर दिया। इसलिए अंबेडकर के विचार सामाजिक क्रांति के लिए ज़रूरी है। इस संदर्भ में बाबुराव बागूल की कविता को देखा जा सकता है-

"मुझे पता है इस मंदिर के देश में

चार्वाक को दफनाया गया और बुद्ध अवतार हुआ।

शीघ्र आना न हो तो मत आना

परंतु चार्वाक की तरह दफन मत हो.....

....जब आना होगा तब आ परंतु आयेगी जब

कम से कम अपने पास आंबेडकर की धधक तो रहने दे।"[11]

बौद्ध संघ में जाति, वर्ण और लिंग के भेदभाव को अस्वीकार किया गया। करुणा और मैत्री बौद्ध नैतिकता के केंद्र में हैं, जो सामाजिक यथार्थ को बदलने का प्रयास करते हैं। बौद्ध धर्म स्वीकृति के पश्चात परंपरागत घृणित कार्य करने से मना कर दिया। तत्पश्चात इसके कारण उन पर किस प्रकार अन्याय, अत्याचार किया गया इसका वर्णन करते हुए प्रह्लाद चेंदवणकर लिखते हैं- "जड़ से जातीयता समाप्त होनी चाहिए इसलिए

जाति निर्मूलन सप्ताह की

आवाज़ लगाई गई।

गाँव के काम करना नकार दिए इसलिए

बौद्धों के घर

जला दिए गए।”[12]

महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित जैन दर्शन जीवन के यथार्थ को अनुशासन, संयम और समझदारी के साथ देखने की सीख देता है। उनके अनुसार सत्य केवल एक ही रूप में नहीं होता, बल्कि उसके कई पक्ष हो सकते हैं इसी विचार को अनेकांतवाद कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि किसी भी बात को एक ही दृष्टि से पूरा नहीं समझा जा सकता। इसी तरह स्याद्वाद यह बताता है कि हर कथन परिस्थितियों के अनुसार सही या आंशिक रूप से सही होता है। इस कारण जैन दर्शन तार्किक और यथार्थ के क़रीब दिखाई देता है। जैन दर्शन में अहिंसा और अपरिग्रह को बहुत महत्व दिया गया है। अहिंसा केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन में अपनाया जाने वाला व्यवहार है, जबकि अपरिग्रह मनुष्य को ज़रूरत से ज़्यादा संग्रह और लालच से दूर रहने की सीख देता है।

बौद्ध और जैन दर्शन दोनों ही भारतीय ज्ञानपरंपरा की श्रमण धारा से जुड़े हैं और जीवन को उसके वास्तविक अनुभवों के आधार पर समझते हैं। गौतम बुद्ध के अनुसार जीवन में दुःख है और यह दुःख हमारी इच्छाओं और अज्ञान से पैदा होता है। इसलिए बौद्ध दर्शन स्थायी आत्मा को नहीं मानता और कहता है कि जीवन लगातार बदलता रहता है। बुद्ध ने भोग और कठोर तपस्या से बचकर चलने वाले मध्यम मार्ग को अपनाने की बात कही, जो जीवन को संतुलित बनाता है। करुणा, मैत्री और समानता जैसे मूल्य बौद्ध दर्शन को मानव-केंद्रित बनाते हैं। इस तरह बौद्ध दर्शन परिवर्तन और करुणा पर ज़ोर देता है, जबकि जैन दर्शन सत्य के अनेक रूपों, संयम और अहिंसा के माध्यम से जीवन को समझने का रास्ता दिखाता है।

पश्चिमी यथार्थवाद मुख्य रूप से भौतिक संसार, बाहरी वास्तविकता और वस्तुगत तथ्यों पर ध्यान देता है, जबकि भारतीय यथार्थवाद विशेषकर बौद्ध और जैन दर्शन यथार्थ को कहीं अधिक व्यापक रूप में समझता है। इसमें केवल बाहरी दुनिया ही नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना, उसके नैतिक मूल्य और सामाजिक संबंधों को भी यथार्थ का महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। आज के समय में जब समाज हिंसा, बढ़ते उपभोक्तावाद और गहरी सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब बौद्ध और जैन दर्शन का यथार्थवादी दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। ये दर्शन करुणा, अहिंसा, संयम और संतुलित जीवन के माध्यम से इन समस्याओं के व्यावहारिक और मानवीय समाधान प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय ज्ञानपरंपरा में बौद्ध और जैन दर्शन ने यथार्थ को सीधे जीवन से जोड़कर देखा है। इन दर्शनों के अनुसार सत्य कोई दूर की अमूर्त या कल्पनात्मक सत्ता नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के रोज़मर्रा के अनुभवों, उसके नैतिक आचरण और समाज में मिल-जुलकर रहने की

प्रक्रिया में निहित है। जीवन के दुःख, संघर्ष, करुणा, अहिंसा और समानता को केंद्र में रखकर इन दर्शनों ने यथार्थ को समझने का व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया। इसी कारण बौद्ध एवं जैन दर्शन भारतीय यथार्थवाद की एक मज़बूत और सुदृढ़ आधार के रूप में स्थापित होते हैं।

संदर्भ-

1. उदान
2. तत्वार्थ सूत्र 7.1
3. इष्टोपदेश -33
4. महाभारत/वनपर्व-117
5. ऋग्वेद 5.62.1
6. कठोपनिषद् 1.2.23 और मुण्डकोपनिषद् 3.2.3
7. बुद्धवाक्य
8. न्यायदर्शन
9. अष्टदश पुराण
10. सामायिक पाठ, जैन आचार्य अमितगति
11. धम्मचक्र प्रवर्तन के बाद के परिवर्तन, डॉ. प्रदीप आगलावे, सम्यक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2011, पृ. सं. 307
12. धम्मचक्र प्रवर्तन के बाद के परिवर्तन, डॉ. प्रदीप आगलावे, सम्यक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2011, पृ. सं. 308